International Journal of Applied Research 2018; 4(3): 170-173

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(3): 170-173
www.allresearchjournal.com
Received: 18-01-2018
Accepted: 25-02-2018

डॉ. कमलेश सरीन
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग स्वामी श्रद्धानन्द कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ. कमलेश सरीन
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग स्वामी श्रद्धानन्द कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली, भारत

नागार्जुन की काव्य–संवेदना

डॉ. कमलेश सरीन

प्रस्तावना

नागार्जुन आधुनिक युग की नवचेतना के कवि हैं। उन्होंने अपने काव्य में जहां एक ओर वर्ग संघर्ष से समस्त मानवों के प्रति गहन संवेदना व्यक्त करते हुए इसके लिए उत्तरदायी व्यवस्था के विरुद्ध तीव्र आक्रोश प्रकट किया है। वहीं दूसरी ओर स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत भी बहुसंख्यक जनता के आभावों, कष्टों एवं पीड़ाओं में लीन देखकर स्वदेशी शासकों के अनुचित कार्यों के प्रति पावर एवं प्रकष्ट व्यंग्य वाणों की बौछार की है। संस्कृत कवियों की सौन्दर्य चेतना कबीर की मायावरी और निराला की अखण्डता को समेटे नागार्जुन का व्यक्तित्व विशेष प्रकार का है। नागार्जुन ने जीवन को उसके विविध रूपों में जटिल संघर्षों की राजनीतिक विकृतियों को, मजदूर आंदोलनों को किसान जीवन के समान सुख–दुःख को पहचानने और अभिव्यक्त करने का वृहत्तर सृजनात्मक उत्तरदायित्व को अपने कंधों पर उठाया है।

नागार्जुन का काव्य–संसार वैविध्यमय होने के साथ–साथ बहुत व्यापक और विराट है। इसमें प्रकृति, मनुष्य, पशु, राजनीतिक, सामाजिक जीवन के मधुर एवं कोमल पक्ष, व्यंग्य की तीखी धार सहित दैनंदिन जीवन की गतिविधियां सब शामिल हैं। नागार्जुन का यही वैविध्यमय संसार उनकी काव्य संवेदना का निर्माण करता है। नागार्जुन का काव्य संसार उनके अनुभवों की तरह ही विविधतापूर्ण है। युगधारा, प्यासी पथराई आंखें, सतरंगे पंखों वाली, तुमने कहा था, इनके प्रमुख काव्य संकलन हैं। इनके काव्य की प्रवृत्तियों का अनुशीलन करने पर उनकी अनुभूतिगत विशेषताएं इस प्रकार हैं :–

मनुष्य के जीवन में सबसे पहली छाप प्रकृति की पड़ती है। मनुष्य का जीवन कहीं न कहीं प्रकृति से ही संचालित होता है। प्रकृति का पूरा प्रभाव मनुष्य के सोचने–समझने–रहन–सहन इत्यादि पर दिखाई देता है। नागार्जुन और उनका काव्य संसार भी इससे अछूता नहीं है। नागार्जुन जीवन और मन प्रकृति का हिस्सा बनकर उनकी कविताओं में प्रस्फुटित हुई है। प्रकृति के असंख्य रूपों ने नागार्जुन को तीव्रता से संवेदित किया है। उनकी पहली कविता–संग्रह युगधारा की कविता 'रजनीगंधा' है। इसी प्रकृति की काव्य विस्तार में एक मनोहारी छटा है –

''तुम खिला करो रात की रानी,
हो म्लान भले यह जीवन और जवानी
तुम खिला करो रात की रानी।''

यह कविता उनके जेलयात्रा के दौरान की है। यहां रात की रानी की सुगंध ने कवि को व्याकुल कर दिया है। 'रजनीगंधा' की सुगंध इस बन्दी जीवन का प्रतिवाद तथा विकल्प–सा है। नीजि जीवन का संताप व्यवस्था के प्रति रोष, अन्याय का विरोध, आततातियों से घृणा, मुक्ति का अहसास ये कविता पूरे जीवन पर चित्रित है। संवेदना का आरंभिक बिन्दु निश्चय ही 'रजनीगंधा' है, जो जीवंतता और जीव का प्रतीक बन जाती है।

नागार्जुन की काव्य–संवेदना का एक मुख्य आलम्बन प्रकृति है। उनके रचना संसार में प्रकृति की अनेकानेक छटाएं हैं।

ताल मखान, अमराइयों, मौनसिरी के फूल, चाँदनी, नीम की टहनियां, सिके हुए भुट्टे, फसल का सोनिया समंदरे, बर्फ और सबसे अधिक बादल। नागार्जुन की प्रिय ऋतु बरसात है, जैसे निराला का बसन्त। नागार्जुन में प्रकृति विषयक सर्वाधिक कविताएं बादलों पर हैं। 'बादल को घिरते देखा' से लेकर आषाढ़ छटि षष्ठी की सघन घन घटा और घिन, घिम घा मेघ बजे से लेकर 'घन कुरंग' तक, प्रकृति के माध्यम से नागार्जुन ने जटिल भाव–बोध को सहजापूर्वक अभिव्यक्त किया है।

विद्रोही कवि की जनपक्षधरता के कारण प्रायः हमारा ध्यान उनकी राजनैतिक एवं व्यंग्यपरक कविताओं तक ही सीमित हो जाता है। हमारा ध्यान उन कविताओं की ओर नहीं जाता। जिनमें स्त्री के प्रति प्रेम व देश के सौंदर्य का बड़ा ही अनूठा चित्रण नागार्जु ने किया है। नागार्जुन की अनेक कविताएं कोमल भावनाओं से संचलित हैं, जिनमें सम्बोधित सिन्दूर तिलकित भाल, तन गई रीढ़, यह तुम थी और चंदू मैंने सपना देखा प्रमुख हैं। सिन्दूर तिलकित भाल कविता में कवि की कोमल भावनाओं से परिचित हुआ जा सकता है –

''घोर निर्जन में परिस्थिति ने दिया है डाल।
याद आता तुम्हारा सिन्दूर तिलकित भाल
कौन है वह व्यक्ति जिसको चाहिऐ न समाज?
कौन है वह एक जिसको नहीं पड़ता दूसरे से काज
चाहिए किसको नहीं सहयोग?
चाहिए किसको नहीं सहवास?''

नागार्जुन के काव्य में स्त्री सौन्दर्य हमेशा अपनी आहलाद दानी–तीव्रता के साथ उपस्थित मिलता है। सौन्दर्य चाहे जिस रूप में प्रकट हो नागार्जुन की कविता में वह स्पष्ट रूप से झलकता है। इस प्रकार प्रेम और सौन्दर्य उनकी कविताओं की गम्भीरता को तोड़ने में विशिष्ट भूमिका निभाती है। मिश्रित–संवेदना की कविताओं – 'उनको प्रणाम', मन्त और चन्दू, मैंने सपना देखा' में नागार्जुन ने एक ही शीर्षक के भीतर जीवन के तमाम अनुभवों व अनुभवों से जुड़े भावों को अभिव्यक्त किया है। नागार्जुन के काव्य साहित्य में इनका उल्लेखनीय स्थान है।

कवि ने अपने युग में उत्पन्न सभी हलचलों, समस्याओं एवं परिस्थितियों का अध्ययन बड़ी गहनता से किया है, वह जानते हैं कि किस प्रकार भारत का दलित वर्ग आभावों की चक्की में पिस रहा है। किस तरह भारत का किसान विविध प्रकार की कठिनाइयों में जूझ रहा है, किस प्रकार यहां मजदूर शोषण का शिकार बन रहा है, किस तरह मध्यवर्ग विविध समस्याओं से उलझकर व्याग्र एवं बेचैन बना रहता है एवं उच्च वर्ग वैभव और विलास के पालने में झूलता हुआ ऐशोआराम का जीवन बिता रहा है और जनता को पीड़ा, कष्ट एवं व्यथा देने में ही आनन्द अनुभव करता है। इस प्रकार वैयक्तिक आभावों एवं सामाजिक कष्टों से पीड़ित एवं संत्रस्त जन–जीवन कवि के हृदय को बेचैन कर देता है। वे कहते हैं –

''जमींदार हैं, साहुकार हैं, बनिया हैं, व्यापारी हैं
अन्दर–अन्दर विकट कसाई बाहर खद्दरधारी है
सब घुस आए भरा पड़ा है भारत माता का मंदिर
एक बार जो फिसले अगुआ फिसल रहे हैं फिर फिर।''

कवि ने सामाजिक विषमता के बढ़ते हुए रसीले मुख को भी देखा है और इसी कारण वह सामाजिक नेताओं को दोषी ठहराते हुए पुकार उठता है –

''खादी ने मलमल से अपनी साठ–गांठ कर डाली है,
बिड़ला–टाटा–डालमिया की तीसरे दिन दिवाली है।''

इस विषमता से दुखी होकर और अभावों से उकताकर कवि मजदूर राज्य स्थापित करने के लिए जनता का आह्वान करता है, जिससे वर्ग संघर्ष समाप्त हो जायेगा, किसान, मजदूर भी जमीन के मालिक बन जायेंगे तथा आभावों और बेकारी का सफाया हो जायेगा।

''सुजलां सफलां शस्य श्यामलां माता के गुण गायेंगे
पानी की खातिर पौधों को कभी नहीं तरसायेंगे
बच्चे जैसी फसलों पर निशा दिन सनेह बरसायेंगे
नाहक सिर पर कोटि–कोटि का कर्जा नहीं चढ़ायेंगे।''

इस तरह कवि ने मजदूर, किसान, शिक्षक, व्यापारी, नेता, कवि, सेठ, जमींदार आदि सभी पर तीक्ष्ण दृष्टि डालते हुए समाज के यथार्थ जीवन को जीता–जागता बिंब अंकित किया और सच्चे जनकवि की भूमिका का अत्यंत सफलतापूर्वक निर्वाह किया है।

नागार्जुन की कविताओं में वैयक्तिक अनुभूति का प्राधान्य दृष्टिगोचर होता है। कवि वैसे पर्याप्त बहिर्मुखी रहे हैं, फिर भी वह काव्य में अधिक अंतर्मुखी दिखाई देते हैं। इसी कारण काव्य में वैयक्तिक आभावों, कष्टों एवं संघर्षों की झांकियां स्थान–स्थान पर मिल जाती है। कवि का विद्रोही स्वर जीवन की कठोरता एवं विषमता से परिपूर्ण होकर कहीं–कहीं तीव्र आक्रोश एवं उग्र क्रोध से कट हो गया है। और वह जीवन संघर्ष में अकेला ही जूझता हुआ दृष्टिगोचर होता है, कवि कहते हैं –

''पैदा हुआ था मैं
दीन–हीन अपठित किसी कृषक कुल में
आ रहा हूँ पीता अभव की आसंव ठेठ
बचपन से
कवि मैं रूपक हूं दबी हुई दूब का
जीवन गुजरता प्रतिपल संघर्ष में।''

इसी वैयक्तिकता को लेकर कवि ने व्यंग्य भी अत्यंत तीखे एवं कटु लिखे हैं। जो मार्मिक हैं, मनोरंजक हैं और मामन्तिक पीड़ा पहुँचाते हैं। परन्तु उनमें कवि की उग्रता एवं तीव्रता में ही सम्पूर्ण देश एवं देशवासियों के प्रति अगाध स्नेह भरा हुआ है।

इस प्रकार कवि ने अपनी वैयक्तिकता को आधार बनाकर अपनी नीजि अनुभूतियों के साथ–साथ स्वदेश एवं स्वदेशवासियों को भी विविध प्रकार से अभिव्यक्ति प्रदान की है।

नागार्जुन के साथ एक विशेष बात यह है कि वह व्यंग्य के भी बेजोड़ कवि हैं।

आलोचकों ने माना है कि हिन्दी साहित्य में कबीर के बाद नागार्जुन ही व्यंग्य के सबसे बड़े कवि हैं। नामवर सिंह जी का कहना है कि – ''यह निर्विवाद है कि कबीर के बाद हिन्दी कविता में नागार्जुन से बड़ा व्यंग्यकार अभी तक कोई नहीं हुआ।'' वास्तव में भावना की तीव्रता तथा एक पक्ष के प्रेम की अधिकता व इतर से घृणा ही व्यंग्य पैदा करती है। 'शासन की बन्दूक' कविता में कोकिला से प्रेम और बन्दूक से घृणा के कारण ही व्यंग्य की तीखी मार दिखाई पड़ती है –

''नफरत की अपनी भट्ठी में
तुम्हें गलाने की कोशिश ही
मेरे अन्दर बार–बार ताकत भरती है।''

नागार्जुन पूरी ताकत से व्यवस्था पर चोट करते हैं। इस संदर्भ में नामवर सिंह कहते हैं – ''उस प्रहार में धार बहा आती है, जहां आवेश संयत होकर व्यंग्य का रूप ले लेता है और दाँतों की मोटी मुस्कान बेतरतीब मुद्दों की थिरकन बन जाती है।''

इसी तरह भारत में ब्रिटेन की रानी के आने के स्वागत की धूम–धाम देखकर नागार्जुन खौल उठते हैं –

''आओ रानी हम ढोयेंगे पालकी
यही हुई राय जवाहर लाल की।''

व्यंग्य में संवेदना की धार उलटी चलती है, जन से प्रेम ही शासन की विद्रूपता के प्रति घृणा के बदल जाता है। विराट प्रकृति का अंग पशु भी है। मनुष्य जीवन भी इस प्रकृति पर जब से है तभी से पशु जीवन भी प्रकृति से जुड़ा हुआ है। जिस प्रकार से प्रकृति के अन्य रूपों में जैसे – पेड़–पौधे, पहाड़, समुद्र इत्यादि ने मनुष्य जीवन को प्रभावित किया है। वैसे ही प्रभावित पशुओं के कारण भी हुआ है। नागार्जुन की कविताओं में संवेदना को उद्दीप्त करने का कार्य पशुओं ने भी किया है। जिसको कवि ने बहुत मार्मिकता से वर्णन किया है। प्रायः हर जगह जानवर और आदमी का जीवन सम्मिलित रूप से आता है। जैसे प्रसिद्ध कविता – 'अकाल' और उसके बाद 'नेवला' में।

निष्कर्ष

नागार्जुन ने अपनी कविता में आत्मीय संस्प्रश उत्पन्न किया है। इससे संवेहित विचार भी गहराया है और पाठक या श्रोता की संवेदना से आत्मीयता का रिश्ता भी मजबूत होता है। नागार्जुन ने मिथकीय प्रयोगं से समाज और राजनीति की विसंगतियों, गिरते हुए नैतिक स्तर और समस्याओं को बड़ी सूझ–बूझ से उकेरा है। नागार्जुन की वर्णनात्मकता की गहराई में कविता की अर्थवत्ता की सशक्त संवेदना निहित है।

संदर्भ सूची

1. अजय तिवारी, 'नागार्जुन और उनकी कविता'।
2. नागार्जुन, 'सतरंगे पंखों वाली'।
3. नागार्जुन, 'खिचड़ी विप्लव देखा हमने'।
4. नागार्जुन, 'तुमने कहा था'।